वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 258 शनिवार 7 फरवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ पेज 2 पर

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री ने डीडवाना-कुचामन को 529 करोड़ रुपये के विकास कार्यों की दी सौगात

ग्राम उत्थान शिविर सरकार की जनता के प्रति जवाबदेही का प्रतीक: भजनलाल

आमजन इन शिविरों में जाकर सरकारी योजनाओं का भरपूर लाभ उठाएं

गत सरकार के पांच साल से अधिक काम हुए हमारी सरकार के दो साल में

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। हमारी सरकार गांवों के उत्थान के लिए निरंतर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेशभर में लगाए जा रहे ग्राम उत्थान शिविर सरकार की जनता के प्रति जवाबदेही का प्रतीक है। उन्होंने आमजन से अपील करते हुए कहा कि इन शिविरों में जाकर सरकारी योजनाओं की पूरी जानकारी लें और उनका भरपूर लाभ उठाएं। शर्मा शुक्रवार को लाडनूं में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर एवं जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि राजस्थान का किसान, गरीब, पशुपालक सरकारी योजनाओं से वंचित न रहे। इसी सोच के साथ हमारी सरकार ने प्रत्येक गिरदावर सर्किल पर ग्राम उत्थान शिविरों की शुरूआत की है जिससे ग्रामीणों को घर के नजदीक ही राज्य की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जा सके। शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार के दो साल के काम गत सरकार के पूरे पांच साल की तुलना में कई गुना ज्यादा है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा दो साल में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमने नहरी तंत्र से 99 हजार 562 हैक्टेयर में सिंचाई सुविधा सृजित की। जबकि पूर्ववर्ती सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल के प्रथम दो वर्ष में 17 हजार 448 हैक्टेयर तथा पूरे पांच साल में केवल 52 हजार 182 हैक्टेयर क्षेत्र में ही सिंचाई सुविधा दी। इसी तरह, हमने 344 लाख मीटर खेतों पर तारबंदी की तथा पूर्ववर्ती सरकार ने शुरूआती दो साल में 8 लाख मीटर तथा पूरे पांच साल में 113 लाख मीटर तारबंदी ही की।

युवाओं को दिए जा रहे अवसर

शर्मा ने कहा कि हमारे प्रदेश का युवा मेहनती है लेकिन गत सरकार के समय पेपरलीक जैसे प्रकरणों से युवाओं के सपनों पर कुठाराघात हुआ था। हमने अपने कार्यकाल में पूरी पारदर्शिता एवं ईमानदारी से परीक्षाएं आयोजित की जिससे एक भी पेपर लीक नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार युवाओं के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर भी उपलब्ध करवा रही है। अब तक 1 लाख से ज्यादा नियुक्तियां दी हैं। डेढ़ लाख से अधिक पदों पर भर्ती प्रक्रिया चल रही है। इस साल एक लाख और पदों का कैलेंडर जारी हो चुका है। उन्होंने युवाओं को आश्वस्त किया वे मन लगाकर पढ़ाई करें। अब एक भी पेपरलीक नहीं होगा। सरकार हर कदम पर आपके साथ खड़ी है। शर्मा ने कार्यक्रम में डीडवाना-कुचामन जिले को करीब 529 करोड़ रुपये राशि के 71 विकास कार्यों की सौगात दी। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं से जुड़े 465 करोड़ रुपये से अधिक राशि के 59 कार्यों का शिलान्यास किया। साथ ही, लगभग 64 करोड़ रुपये की राशि के 12 विकास कार्यों का लोकार्पण किया। इससे पहले शर्मा ने परिसर में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर का अवलोकन किया एवं विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को चैक एवं प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम में राजस्व राज्यमंत्री विजय सिंह चौधरी, किसान आयोग अध्यक्ष सी. आर. चौधरी, विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार सहित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

अन्नदाता किसान हमारी अर्थव्यवस्था का आधार

शर्मा ने कहा कि अन्नदाता किसान हमारी अर्थव्यवस्था का आधार है। हमारी सरकार ने किसानों की आय बढ़ाने और सशक्तिकरण कई ठोस कदम उठाए हैं। प्रदेश के 22 जिलों में किसानों को दिन में बिजली मिल रही है। उन्होंने कहा कि हमने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत राशि में बढ़ोतरी, गेहूं पर 150 रुपये का बोनस, किसानों को 50 हजार करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त फसली ऋण, 2 लाख 3 हजार हेक्टेयर में ड्रिप और फव्वारा संयंत्र, डिग्गी और फार्म पॉन्ड बनाने तथा 17 लाख से अधिक मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण जैसे अनेक कार्य किए गए है जिससे किसान सशक्त हो सकेंगे।

प्रधानमंत्री के ग्रामीण भारत को सशक्त करने के लिए उठाए अनेक कदम

मुख्यमंत्री ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ग्रामीण भारत को सशक्त करने के लिए विकसित भारत जी राम जी कानून लेकर आई है। इस कानून से ग्रामीण क्षेत्रों में साल में 125 दिन का पक्का रोजगार मिलेगा। हर काम डिजिटल तरीके से रिकॉर्ड होगा। इससे पूरी पारदर्शिता व तकनीक के सहारे काम होगा और मजदूरी सीधे लाभार्थी के खाते में पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि इस कानून के तहत गांव में स्थायी संपत्ति बनेगी।

ग्राम उत्थान शिविर से ग्रामीणों के मौके पर हो रहे काम

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब तक प्रदेश में 1500 से ज्यादा ग्राम उत्थान शिविर लगाकर 77 लाख से अधिक काम किए गए है। आमजन को 98 हजार से ज्यादा सोइल हेल्थ कार्ड तथा 55 हजार से अधिक स्वामित्व कार्ड वितरित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि इन शिविरों में 30 हजार किसान क्रेडिट कार्ड के आवेदन, 5 लाख 10 हजार पशुधन का इलाज तथा 77 हजार से अधिक पशुओं का टीकाकरण किया गया है।

'गरिमा प्रोजेक्ट' के तहत बालिकाओं को सेनेटरी नैपकिन वितरित

महावीर इंटरनेशनल केंद्र ने 'झिझक छोड़ो-चुप तोड़ो' अभियान के माध्यम से किया जागरूक

खेरवाड़ा. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल (एमआई) केंद्र, खेरवाड़ा द्वारा रानी रोड स्थित आकार कॉलेज में 'सेवा कार्यक्रम' के अंतर्गत सेनेटरी नैपकिन वितरण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। केंद्र के अध्यक्ष मुकेश कलाल और सचिव जितेंद्र जैन के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में कॉलेज के विभिन्न सत्रों की लगभग 50 बालिकाओं को सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए।

स्वच्छता और स्वास्थ्य पर विशेष सत्र

कॉलेज की उप-प्राचार्य भावना मेघवाल और कार्यालय सहायक संगीता डामोर ने 'झिझक छोड़ो-चुप्पी तोड़ो, खुलकर बोलो' अभियान के तहत छात्राओं को संबोधित किया। उन्होंने माहवारी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस दौरान छात्राओं को माहवारी के समय होने वाली शारीरिक समस्याओं, उनके वैज्ञानिक निराकरण और सुरक्षित स्वास्थ्य के लिए सेनेटरी पैड्स की उपयोगिता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम में इनकी रही उपस्थिति

इस सेवा कार्य के दौरान एमआई केंद्र के संरक्षक दिनेश जैन, पूर्व सचिव हितेश पंचोली, पूर्व अध्यक्ष हेमचन्द लबाना, बसंत कोठारी, पूर्व उपाध्यक्ष सुरेश जैन और मिलिंद व्यास उपस्थित थे। साथ ही वीरा मेना जैन, मीना जैन, टीना जैन, किरण चंदावत, नितिन परमार और अश्विनी परमार सहित कई गणमान्य सदस्यों ने अपनी सहभागिता निभाते हुए इस सामाजिक सरोकार को सफल बनाया।

क्या नमक के बिना हमारा भोजन अधूरा है?

जानें स्वास्थ्य के लिए कौन सा नमक है सर्वश्रेष्ठ

डॉ. पीयूष त्रिवेदी

आयुर्वेद मर्म विशेषज्ञ, जयपुर (राजस्थान)

नमक हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह न केवल भोजन का स्वाद बढ़ाता है, बल्कि हमारे शरीर की जैविक क्रियाओं को भी प्रभावित करता है। नमक से प्राप्त होने वाला 'सोडियम' तंत्रिका तंत्र और मांसपेशियों के संचालन के लिए आवश्यक है। हालांकि, इसकी अधिकता सेहत के लिए उतनी ही हानिकारक भी हो सकती है। एक स्वस्थ जीवनशैली के लिए नमक की सही मात्रा और सही प्रकार का चुनाव करना अत्यंत आवश्यक है।

प्रमुख नमक के प्रकार और उनके गुण

1. समुद्री नमक (सी-सॉल्ट): समुद्री नमक सामान्य सफेद नमक का एक बेहतर विकल्प माना जाता है। वाष्पीकरण के माध्यम से प्राप्त होने वाले इस नमक में मैग्नीशियम, पोटेशियम और कैल्शियम जैसे महत्वपूर्ण खनिज प्राकृतिक रूप से विद्यमान रहते हैं। इसमें अतिरिक्त रसायनों (एडिटिव्स) का अभाव होता है, जिससे यह संसाधित टेबल सॉल्ट की तुलना में अधिक स्वास्थ्यवर्धक सिद्ध होता है।

2. साधारण नमक (टेबल सॉल्ट): घरों में आमतौर पर इस्तेमाल होने वाला सफेद नमक ही 'टेबल सॉल्ट' है। यह अत्यधिक संसाधित (प्रोसेस्ड) होता है। यद्यपि यह आयोडीन का मुख्य स्रोत है, किंतु अधिक मात्रा में इसका सेवन उच्च रक्तचाप और हृदय रोगों का कारण बन सकता है। इसे सदैव सीमित मात्रा में ही उपयोग करना चाहिए।

3. सेंधा नमक (पिंक सॉल्ट/हिमालयन सॉल्ट): वर्तमान में 'पिंक सॉल्ट' या सेंधा नमक अपनी शुद्धता के कारण अत्यंत लोकप्रिय है। इसे हिमालय की प्राचीन खानों से प्राप्त किया जाता है। आयुर्वेद में इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह शीतल प्रकृति का होता है और पाचन में सहायक है। इसमें सोडियम की मात्रा साधारण नमक से थोड़ी कम और प्राकृतिक खनिजों की मात्रा अधिक होती है।

स्वास्थ्य के लिए कौन सा नमक है सही?

सभी प्रकार के नमक में सोडियम होता है, इसलिए मुख्य प्रश्न 'प्रकार' के साथ-साथ 'मात्रा' का भी है। विशेषज्ञों और स्वास्थ्य दिशानिर्देशों के अनुसार:

एक स्वस्थ वयस्क को दिन भर में 2,300 मिलीग्राम (लगभग एक छोटा चम्मच) से अधिक नमक नहीं लेना चाहिए।

उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए यह मात्रा और भी कम, लगभग 1,500 मिलीग्राम (3/4 चम्मच) होनी चाहिए।

नमक के बिना भोजन निस्संदेह बेस्वाद है, किंतु इसकी अधिकता 'धीमा जहर' बन सकती है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों ही संतुलित मात्रा में और यथासंभव प्राकृतिक नमक (जैसे सेंधा नमक) के उपयोग की सलाह देते हैं।

अंतर्मना धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास
तथा पतंजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा आयोजित

एक हर मास उपवास

एक दिन स्वयं के लिए

7 फरवरी, 2026 | दोपहर 2.30-5.00 बजे

सेन्ट्रल लॉज एन्टरटेनमेन्ट, पैराडाइज सर्किल, जयपुर (EP)

द्वितीय सामूहिक उपवास एवं कवि सम्मेलन

राजीव जैन गाजियाबाद अध्यक्ष बापू नगर	राजेश रांवका उपाध्यक्ष जयपुर	विनय सौगानी सह-सचिव जयपुर	आलोक जैन सचिव बापू नगर
प्रितेश जैन कोषाध्यक्ष जयपुर	चेतन जैन निमोड़िया सदस्य जयपुर	आशीष चौधरी सदस्य जयपुर	

परिदृश्य

डराने लगी है आभासी दुनिया

ललित गर्ग

ऑनलाइन गेमिंग की लत और आभासी दुनिया कितनी भयावह हो सकती है, इसकी बानगी एक ही दिन में घटी दो अलग-अलग घटनाओं ने पेश की है। इन घटनाओं ने न केवल समाज को झकझोरा है, बल्कि हमारी सामाजिक संरचना और सामूहिक असावधानी पर भी गहरा प्रश्नचिह्न लगा दिया है। गाजियाबाद में तीन सगी बहनों (12, 14 और 16 वर्ष) ने नौवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। वे कोरियन गेम की इस कदर दीवानी थीं कि कोरिया जाकर बसने का सपना देखती थीं। जब परिजनों ने मोबाइल छीना, तो अवसाद में आकर उन्होंने यह आत्मघाती कदम उठा लिया। ऐसी ही एक घटना कुल्लू में हुई, जहाँ एक 15 वर्षीय किशोर ने ऑनलाइन गेम के अपने विदेशी साथी से बिछुड़ने के गम में जान दे दी। ये घटनाएं कोई आकस्मिक संयोग नहीं हैं, बल्कि इस बात का संकेत हैं कि आभासी दुनिया किस तरह वास्तविक जीवन पर हावी होती जा रही है। हम अनजाने में एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं जहाँ संवेदनाएं और जीवन-मूल्य स्क्रीन के पीछे दम तोड़ रहे हैं।

धीमा जहर बनती गेमिंग

तकनीक अपने आप में शत्रु नहीं है, लेकिन जब यह किशोरों के लिए लत बन जाए, तो यह 'धीमा जहर' बन जाती है। गेमिंग की दुनिया बच्चों को तात्कालिक रोमांच और काल्पनिक पहचान तो देती है, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें वास्तविकता से काट देती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि अत्यधिक गेमिंग बच्चों के मस्तिष्क में आवेग नियंत्रण को कमजोर करती है, जिससे उनमें भावनात्मक अस्थिरता बढ़ती है। कई बार बच्चे आत्महत्या जैसे चरम कदम को भी 'गेम ओवर' की तरह देखने लगते हैं, जो अत्यंत खतरनाक सोच है। संवादहीनता और पारिवारिक परिवेश आज के एकल परिवारों में माता-पिता की व्यस्तता और संवाद की कमी ने बच्चों को अकेलेपन की ओर धकेला है। स्मार्टफोन कई घरों में बच्चों को 'चुप्पी' खरीदने का सबसे आसान साधन बन चुका है। माता-पिता अक्सर अपनी व्यस्तता के कारण बच्चों के हाथ में फोन थमा देते हैं, जो आगे चलकर बड़ी समस्या बन जाता है।

संपादकीय

दिल्ली में सुरक्षा पर सवाल

देश की राजधानी दिल्ली के लिए साल 2026 की शुरूआत सुरक्षा के लिहाज से बेहद चिंताजनक रही है। दिल्ली पुलिस के आधिकारिक आंकड़े एक भयावह तस्वीर पेश कर रहे हैं। 1 से 15 जनवरी 2026 के बीच दिल्ली से 800 से ज्यादा लोग लापता हुए हैं, जिसका अर्थ है कि हर रोज औसतन 54 लोग बिना किसी सूचना के गायब हो रहे हैं। इनमें महिलाओं और नाबालिग लड़कियों की संख्या सबसे अधिक है, जो कुल

मामलों का लगभग 63% है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, जनवरी के शुरूआती 15 दिनों में कुल 807 लोग लापता दर्ज किए गए। यानी हर घंटे लगभग दो लोग राजधानी की सड़कों से ओझल हो रहे हैं। इन 807 लोगों में 509 महिलाएं और लड़कियां शामिल हैं। प्रशासन की सक्रियता पर सवाल तब और गहरे हो जाते हैं जब यह पता चलता है कि 3 फरवरी तक इनमें से केवल 235 लोगों को ही खोजा जा सका था, जबकि 572 लोगों के बारे में पुलिस के पास कोई ठोस सुराग नहीं था। विस्तृत विश्लेषण देखें तो इन 15 दिनों में 616 वयस्क लापता हुए, जिनमें से 435 अब भी लापता हैं। वहीं, 191 नाबालिगों के मामले सामने आए, जिनमें से केवल 48 बच्चों को ट्रेस किया जा सका है। लापता नाबालिगों में 146 लड़कियां और 45 लड़के हैं। चिंता की बात यह है कि गायब होने वाले बच्चों में 8 वर्ष से कम उम्र के 9 बच्चे और 8 से 12 वर्ष के 13 बच्चे भी शामिल हैं। दिल्ली में गुमशुदगी की यह समस्या नई नहीं है। साल 2025 में कुल 24,508 लोग लापता हुए थे, जिनमें 60 फीसदी से अधिक महिलाएं थीं। बीते एक दशक का आंकड़ा और भी डरावना है; पिछले 10 वर्षों में दिल्ली से लगभग 2.51 लाख लोग गायब हुए, जिनमें से 52,000 लोगों का आज तक कोई पता नहीं चल सका है। राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो एनसीआरबी के मुताबिक साल 2023 में पूरे भारत में लगभग 8.68 लाख लोग लापता हुए थे, जिसमें दिल्ली जैसे महानगरों की स्थिति सबसे अधिक संवेदनशील है। सामाजिक कार्यकर्ताओं और पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इस संकट के पीछे कई जटिल कारण हैं। आर्थिक दबाव, बेरोजगारी, पारिवारिक कलह और घरेलू हिंसा प्रमुख कारक हैं। अक्सर साल की शुरूआत में वित्तीय तनाव के कारण लोग घर छोड़ देते हैं। हालांकि, महिलाओं और नाबालिगों के मामले में 'ह्यूमन ट्रैफिकिंग' (मानव तस्करी) और जबरन अपहरण का खतरा सबसे बड़ा है। एनसीआरबी की रिपोर्ट बताती है कि लापता महिलाओं में से 20-25 प्रतिशत तस्करी का शिकार होती हैं। दिल्ली, अपनी बड़ी प्रवासी आबादी के कारण अंतरराष्ट्रीय तस्करी नेटवर्क का हब बनती जा रही है। नाबालिग लड़कियों की बड़ी संख्या में गुमशुदगी के पीछे अवैध ट्रैफिकिंग और असामाजिक तत्वों के सुनियोजित जाल की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। दिल्ली पुलिस का कहना है कि वे तकनीक और केंद्रीकृत रिपोर्टिंग सिस्टम के जरिए ट्रैकिंग को बेहतर बना रहे हैं।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

डिजिटल संप्रभुता बनाम डेटा साम्राज्यवाद

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

21वीं सदी में भारत केवल एक विशाल उपभोक्ता बाजार नहीं रहा, बल्कि यह डिजिटल लोकतंत्र और डेटा संप्रभुता के वैश्विक विमर्श का केंद्र बन चुका है। करोड़ों भारतीयों का डिजिटल जीवन उनकी बातचीत, आर्थिक लेनदेन और वैचारिक झुकाव अब तकनीकी प्लेटफॉर्मों के सर्वरों में दर्ज हो रहा है। ऐसे में यह प्रश्न केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सीधे तौर पर संविधान और मानवाधिकारों से जुड़ गया है। 'डिजिटल पर्सनल डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023' इसी ऐतिहासिक जरूरत की उपज है, जो यह स्पष्ट करता है कि भारतीय नागरिकों का डेटा किसी अनियंत्रित कॉर्पोरेट शक्ति के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। व्हाट्सऐप की 'टेक इट ऑर लीव इट' नीति और कानूनी विवाद विवाद की जड़ वर्ष 2021 में व्हाट्सऐप द्वारा लाई गई प्राइवेसी पॉलिसी है, जिसने यूजर्स को 'शर्तें मानो या सेवा छोड़ो' का विकल्प दिया। भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने इसे बाजार में अपनी प्रभुत्व स्थिति का दुरुपयोग मानते हुए मेटा पर 213.14 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया। हालांकि, जनवरी 2025 में अपीलीय न्यायाधिकरण ने जुर्माने को बरकरार रखते हुए भी 'दुरुपयोग' वाले निष्कर्ष पर विरोधाभासी रुख अपनाया, जिसे मेटा ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। 'संविधान नहीं तो भारत छोड़िए' 3 फरवरी 2026 को सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई ने इस विवाद को एक नया मोड़ दे दिया। मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पीठ ने व्हाट्सऐप-मेटा की प्राइवेसी प्रैक्टिस पर बेहद कठोर रुख अपनाया। केंद्र सरकार की दलील कि यह पॉलिसी 'शोषणकारी' है, पर अदालत ने स्पष्ट चेतावनी दी ''अगर आप हमारे संविधान का पालन नहीं कर सकते, तो भारत छोड़कर जाइए।'' यह टिप्पणी केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि भारत की डिजिटल संप्रभुता की घोषणा है। अदालत ने रेखांकित किया कि कोई भी वैश्विक कंपनी तभी व्यापार कर सकती है, जब वह भारतीय नागरिकों की गरिमा और मौलिक अधिकारों का सम्मान करे। अदालत ने इस बात पर भी चिंता जताई कि एक ग्रामीण महिला या कम शिक्षित वेंडर के लिए अंग्रेजी में लिखे लंबे प्राइवेसी दस्तावेजों को समझना असंभव है। अतः 'सूचित सहमति' तभी वास्तविक मानी जाएगी, जब यूजर को पूरी तरह पता हो कि उसका डेटा किसके साथ और क्यों साझा किया जा रहा है। व्यवहारगत दोहन और एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन पर सवाल सुनवाई के दौरान अदालत ने प्राइवेसी से आगे बढ़कर 'व्यवहारगत दोहन' पर चिंता जताई। मुख्य न्यायाधीश ने उदाहरण दिया कि कैसे किसी दवा का नाम मैसेज करने पर तुरंत उसी के विज्ञापन दिखने लगते हैं। यह एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन के दावों के बीच मेटाडेटा के व्यावसायिक प्रोफाइलिंग की ओर इशारा करता है। मेटा के वकील ने जब अंतरराष्ट्रीय मानकों की दलील दी, तो अदालत ने दो टूक कहा कि उपभोक्ताओं की 'चुप्पी' को उनकी 'सहमति' नहीं माना जा सकता। यह मामला केवल एक ऐप की नीति का नहीं है, बल्कि यह संघर्ष 'डेटा साम्राज्यवाद' और 'संवैधानिक संप्रभुता' के बीच है। यूरोप के **GDPR** की तरह भारत का **DPDP** एक्ट भी अब डेटा गवर्नेंस की दिशा में वैश्विक नेतृत्व के लिए तैयार है। 9 फरवरी को होने वाली अगली सुनवाई भारत के डिजिटल भविष्य की दिशा तय करेगी। संकेत स्पष्ट हैं भारतीय संविधान और नागरिकों की निजता के साथ समझौता स्वीकार्य नहीं है। डिजिटल युग में नागरिक की स्वायत्तता का निर्धारण कॉर्पोरेट एल्गोरिद्म नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संविधान ही करेगा।

प.पू. मुनिकुञ्जर आचार्य 108 श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर)
प.पू. आचार्य 108 श्री महावीरकीर्ति जी महाराज
प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज
मूलनायक 1008 श्री आदिनाथ भगवान
प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य 108 श्री सन्मतिसागर जी महाराज
प.पू. संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज
प.पू. आचार्य 108 श्री समयसागर जी महाराज
अष्टाह्निका महापर्व
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
श्री 1008
सिद्धचक्र महामण्डल विधान
एवं विश्व शांति महायज्ञ
दिनांक 24 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक
प्रातः 6.30 बजे से प्रातः 11.00 बजे तक
सादर जय जिनेन्द्र !
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मीरा मार्ग, मानसरोवर में परम प्रभावक दिव्य तपस्वी राष्ट्र संत, आचार्य श्री 108 सुन्दरसागर जी महाराज ससंघ एवं वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय आचार्य श्री 108 शशांकसागर जी ससंघ के सानिध्य में अष्टाह्निका महापर्व में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ दिनांक 24 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक का आयोजन किया जा रहा है। इस धार्मिक आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर पुण्यार्जन करें एवं गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें।
पावन सानिध्य
परम प्रभावक दिव्य तपस्वी राष्ट्र संत, आचार्य श्री 108
सुन्दरसागर जी महाराज ससंघ
विधानाचार्य
विजय वात्सल्य, लखनादौन
पावन सानिध्य
वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय
आचार्य श्री 108 शशांकसागर जी महाराज ससंघ
सहयोग राशि 1100/-रु. (प्रति व्यक्ति) भोजन व्यवस्था सहित
आयोजक : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
अध्यक्ष सुशील पहाड़िया 9928557000
वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाड़ा 98295 61399
उपाध्यक्ष जम्बू कुमार सौगानी 76650 14497
संयुक्त मंत्री डॉ. सुरेश चन्द जैन सोनी 95715 99999
कोषाध्यक्ष अरूण कुमार जैन 7014689216
संगठन मंत्री अशोक कुमार सेठी 98288 10828
सांस्कृतिक मंत्री सीए मनोज कुमार जैन 93145 03618
मंत्री राजेन्द्र कुमार सेठी 9314916778
कार्यकारिणी सदस्य- अनिल सौगानी, अरुण कुमार जैन (पाटोदी), अशोक कुमार जैन (छाबड़ा), राजेश काला (एडवोकेट), सुनील कुमार जैन, सुनील काला, विजय जैन (झाँझरी), सहवृत सदस्य-शान्ति विजय गंगवाल, राकेश बाकलीवाल
कार्यक्रम स्थल आदिनाथ भवन मीरा मार्ग, मानसरोवर
श्री आदिनाथ महिला जागृति समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
अध्यक्ष सुशीला जैन रांवका 9982265464
वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती स्वर्णकिरण गोधा 9166191367
संयुक्त सचिव श्रीमती निर्मला बाकलीवाल 9828233224
कोषाध्यक्ष श्रीमती रेणु पाटनी 7597000862
संगठन सचिव श्रीमती ममता जैन श्रीमाल 8742023232
सांस्कृतिक सचिव श्रीमती सुनीता जैन 7065132609
सह सांस्कृतिक सचिव श्रीमती इन्दु सौगाणी 946038117
प्रचार सचिव श्रीमती अनिला बैनाड़ा 9828316565
सचिव रश्मि जैन सांगानेरिया 9414160750
विद्यासागर पाठशाला, मीरा मार्ग, जयपुर
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, मीरा मार्ग, जयपुर
मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह) जयपुर मो. 9829050791

पंचम पट्टाचार्य वात्सल्य वारिधि आचार्य
श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ का

भव्य मंगल प्रवेश

रविवार 8 फरवरी

दोपहर 3:15 बजे • पदमपुरा बाडा

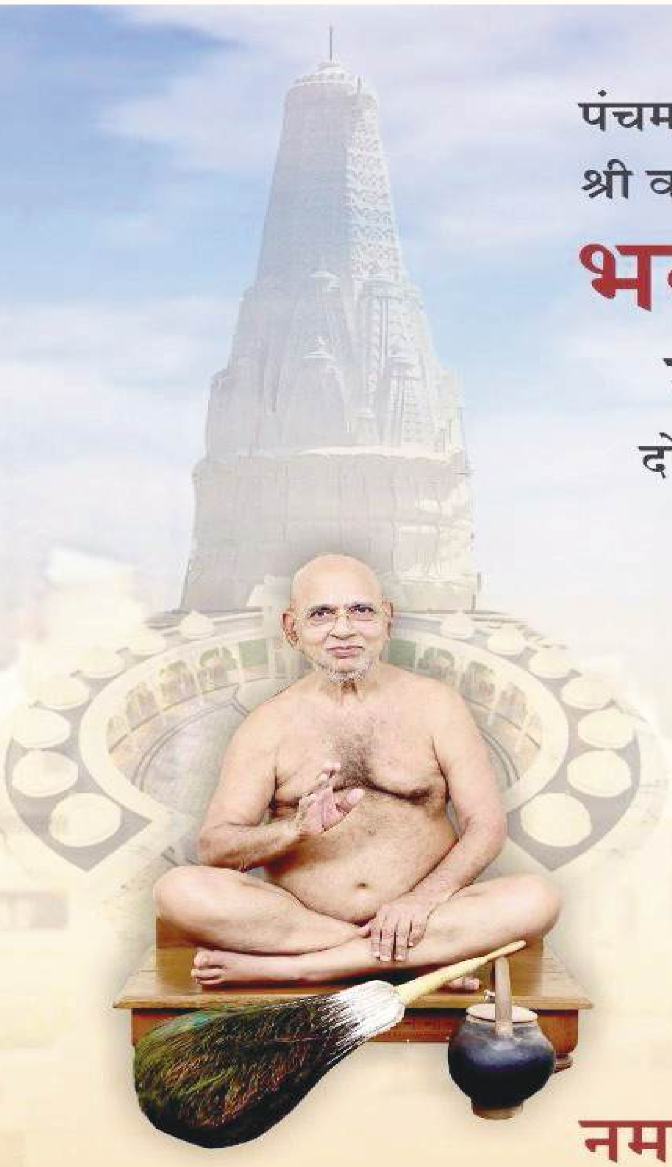

नमन • वन्दन • अभिनन्दन

आइए

अपने परिवार, मित्रों और समाज के साथ
इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनें।
अपने जीवन में पुण्य का अमूल्य अवसर जोड़ें।

पदमपुरा आपका प्रतीक्षा कर रहा है

पदमपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति एवं
समस्त कार्यकारिणी, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा

पद्मपुरा
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026
श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी
एवं
पद्मबल्लभ शिखर कलश - ध्वजारोहण महामहोत्सव
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर, राजस्थान
: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ
: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ
प्रतिष्ठाचार्य : पं. हँसमुख जी जैन (धरियावद) राज.
: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि
पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज
ससंघ
पधारो
पद्मपुरा बाड़ा
जहां धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है
: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका
105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी
ससंघ
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में इन्द्र एवं अन्य पात्र बनने के लिए सम्पर्क करें।
सुधीर कुमार जैन 'एडवोकेट' 94140 50432
हेमन्त सौगानी 'एडवोकेट' 98290 64506
राजकुमार कोठ्यारी 94140 48432
निवेदक
पद्मपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति
अन्तर्गत : प्रबन्ध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा), जयपुर, राजस्थान
सकल दिगम्बर जैन समाज पद्मपुरा एवं जयपुर (राजस्थान)
महोत्सव कार्यालय : एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001 | मोबाईल नम्बर : 94140 48432, 98290 64506
क्षेत्रीय कार्यालय : बाड़ा पद्मपुरा जयपुर 303 903 | मोबाईल नम्बर : 90579 03365

त्रिमूर्ति मंदिर में सल्लेखना पूर्वक हुई क्षुल्लक श्री विश्वसिद्ध सागर जी महाराज की समाधि; पंचतत्व में विलीन हुई देह

डोल यात्रा में उमड़ा जनसैलाब, नम आंखों से गुरुदेव को दी अंतिम विदाई

सुसनेर. शाबाश इंडिया। जैन समाज में अध्यात्म और वैराग्य की एक और लौ शुक्रवार को शांत हो गई। परम पूज्य गणधर मुनि श्री 108 विवर्द्धन सागर जी महाराज के संघस्थ क्षुल्लक श्री 105 विश्वसिद्ध सागर जी महाराज ने शुक्रवार प्रातः श्री दिगम्बर जैन त्रिमूर्ति मन्दिर परिसर में सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण प्राप्त किया।

नगर भ्रमण के साथ निकली अंतिम डोल यात्रा

दोपहर 1 बजे इंदौर-कोटा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित त्रिमूर्ति मंदिर से महाराज जी की अंतिम डोल यात्रा पूर्ण गरिमा और श्रद्धा के साथ निकाली गई। बैंड-बाजों के साथ निकली यह यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरी, जहाँ भक्तों ने स्थान-स्थान पर गुरुदेव को नमन किया। यात्रा में बड़ी संख्या में समाजजन सम्मिलित हुए, जिनकी आँखों में अपने गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा और विदाई का शोक स्पष्ट झलक रहा था। नगर भ्रमण के पश्चात यात्रा पुनः त्रिमूर्ति मंदिर पहुँची, जहाँ अंतिम संस्कार की क्रियाएँ संपन्न हुईं।

विधि-विधान से हुआ अंतिम संस्कार

मुनिश्री 108 विश्वनायक सागर महाराज के सान्निध्य में मंत्रोच्चार के बीच अंतिम संस्कार की प्रक्रियाएं पूर्ण की गईं। लाभार्थी कोमल चंद जैन छत्रीवाला, प्रदीप कुमार लुहाडिया एवं ओमप्रकाश जैन (गुरुकृपा परिवार) ने महाराज श्री की पार्थिव देह का विधिवत पूजन-अभिषेक कर मुखाग्नि दी। इसके साथ ही उनकी देह पंचतत्व में विलीन हो गई।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

वैलेंटाइन वीकः प्रेम का उत्सव या भावनात्मक प्रदर्शन का दबाव?

लेखकः डॉ. अखिल बंसल, जयपुर

वर्तमान समय में 'वैलेंटाइन वीक' प्रेम के उत्सव से अधिक भावनात्मक प्रदर्शन और सामाजिक विज्ञापनों का सप्ताह बन गया है। सात दिनों को अलग-अलग नामों में विभाजित कर प्रेम को चरणों में बाँट दिया गया है—मानो मानवीय भावनाएँ भी अब किसी कैलेंडर की मोहताज हो गई हों। 'रोज डे' से लेकर 'किस डे' तक का यह सफर अब स्वाभाविक प्रेम का नहीं, बल्कि बाजारी दबाव का प्रतीक बनता जा रहा है। सोशल मीडिया और तुलना का संकट आज का युवा वर्ग इस सप्ताह का सबसे बड़ा लक्ष्य भी है और सबसे बड़ा शिकार भी। सोशल मीडिया ने प्रेम को 'तुलना' की वस्तु बना दिया है। किसे क्या उपहार मिला, किसने क्या चित्र साझा किया और किसका संबंध कितना 'सटीक' (परफेक्ट) दिख रहा है—यही आज की प्राथमिकता है। परिणामतः, प्रेम एक आंतरिक अनुभूति न रहकर बाहरी प्रदर्शन मात्र रह गया है। जो युवा इस दौड़ में सम्मिलित नहीं हो पाते, वे स्वयं को उपेक्षित और कमतर समझने लगते हैं। भावनाओं का वस्तुकरण वैलेंटाइन वीक का बढ़ता बाजारीकरण भावनाओं को वस्तुओं में परिवर्तित कर रहा है। प्रेम का मूल्य अब उपहारों की कीमत, ब्रांड और दिखावे से आँका जाने लगा है। प्रश्न यह नहीं है कि प्रेम व्यक्त किया जाए या नहीं, प्रश्न यह है कि क्या प्रेम की गहराई केवल धन के व्यय और प्रदर्शन से तय होगी? सांस्कृतिक दृष्टि और मूल्यबोध भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि में प्रेम कभी क्षणिक या उथला नहीं रहा। यहाँ प्रेम को संस्कार, मयार्दा और उत्तरदायित्व के साथ परिभाषित किया गया है। जैन दर्शन तो प्रेम को 'अहिंसा की पराकाष्ठा' मानता है—एक ऐसा पवित्र भाव जिसमें दूसरे को किसी भी प्रकार की मानसिक या शारीरिक पीड़ा न पहुँचे। इसके विपरीत, आज प्रेम के नाम पर बढ़ता मानसिक दबाव और अपेक्षाओं का बोझ युवाओं में भावनात्मक असंतुलन पैदा कर रहा है। संवाद और संवेदनशीलता की आवश्यकता संपादकीय दृष्टि से यह चिंतन आवश्यक है कि यह सप्ताह युवाओं को क्या सिखा रहा है—संवेदनशीलता या उपभोग? संबंधों की गहराई या सतही आकर्षण? यदि प्रेम में सम्मान, धैर्य और संवाद का अभाव है, तो वह सप्ताह भर का उत्सव केवल खोखला आडंबर ही रहेगा। वैलेंटाइन वीक का विरोध समाधान नहीं है, किंतु उसका अंधानुकरण भी उतना ही हानिकारक है। समाज को एक ऐसे संतुलन की आवश्यकता है जहाँ प्रेम को स्वाभाविक रूप से स्वीकार किया जाए, लेकिन उसे मयार्दा और मूल्यों से अलग न किया जाए। यह सप्ताह तभी सार्थक हो सकता है जब यह आत्ममंथन का अवसर बने कि हमारे संबंध कितने ईमानदार और उत्तरदायी हैं। अंततः, प्रेम किसी सप्ताह का विषय नहीं, बल्कि जीवन भर निभाया जाने वाला मूल्य है। जो प्रेम स्वतंत्रता दे, सम्मान दे और आत्मबल बढ़ाए—वही वास्तविक प्रेम है, शेष सब केवल दिखावा है।

कोटा थर्मल में संयुक्त मॉक ड्रिल का आयोजन

विभिन्न एजेंसियों की क्षमताओं को परखा

आजाद शेरवानी. शाबाश इंडिया

कोटा। राजस्थान के कोटा स्थित 'कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन' की सर्विस बिल्डिंग (यूनिट-1 कंट्रोल रूम) में आज शाम 6 बजे आपदा प्रबंधन से संबंधित एक संयुक्त मॉक ड्रिल का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस मॉक ड्रिल का मुख्य उद्देश्य किसी बड़े अग्निकांड या आपातकालीन स्थिति में विभिन्न एजेंसियों की प्रतिक्रिया क्षमता का मूल्यांकन करना और आपसी समन्वय को और अधिक सुदृढ़ बनाना था।

मॉक ड्रिल का परिदृश्य

अभ्यास के दौरान एक काल्पनिक स्थिति तैयार की गई, जिसमें यूनिट-1 के कंट्रोल रूम में आग लगने और कुछ कर्मचारियों के भीतर फंसे होने का परिदृश्य दशार्या गया। इस आपात स्थिति से निपटने हेतु CISF, अग्निशमन इकाइयों, SDRF, नागरिक सुरक्षा दल,

राजस्थान पुलिस तथा बम निरोधक एवं निस्तारण दस्ते (BDDS) द्वारा त्वरित और समन्वित कार्रवाई की गई।

विद्यमान आपातकालीन प्रतिक्रिया तंत्र की प्रभावशीलता का आकलन।

विभिन्न एजेंसियों के मध्य संचार व्यवस्था और आपसी तालमेल का परीक्षण।

निकासी, बचाव, अग्निशमन और चिकित्सा सहायता की दक्षता को परखना।

इस अभ्यास में निम्नलिखित इकाइयों ने सक्रिय रूप से भाग लिया:

CISF: 45 कार्मिक

SDRF: 41 कार्मिक

कोटा थर्मल अग्निशमन विभाग: 13 कार्मिक

नगर निगम अग्निशमन दल: 16 कर्मी एवं 04 फायर टेंडर

राजस्थान पुलिस: 08 कार्मिक

चिकित्सा दल: 04 कार्मिक और 01 एम्बुलेंस

BDDS टीम: 04 सदस्य (स्नीफर डॉग एवं उपकरणों सहित)

राज्य नागरिक सुरक्षा दल: 10 कार्मिक

प्रशासनिक एवं प्रबंधन: कोटा थर्मल के 10 स्टाफ सदस्य और 02 राज्य प्रशासनिक अधिकारी।

सफलतापूर्वक समापन

सभी एजेंसियों ने मानक संचालन प्रक्रियाओं का पालन करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। अभ्यास के अंत में पाया गया कि आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के लिए तंत्र पूरी तरह सक्षम है, साथ ही सुधार के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं की भी पहचान की गई। इस दौरान कोटा शहर के कई वरिष्ठ प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों सहित कोटा थर्मल के डिप्टी कमांडेंट टी. हॉकीप, उप मुख्य अभियंता (फायर) के. पी. ओझा, उप मुख्य अभियंता अशोक चालाना, अधिशासी अभियंता एन. के. शर्मा, अधिशासी अभियंता (फायर) दिनेश कुमार बंसल, सहायक अभियंता दीपक सिंह राजौरा, प्रीति वणावला और कनिष्ठ अभियंता प्रकाश चंद्रोल सहित कई अधिकारी उपस्थित रहे।

ज्ञानोदय क्षेत्र नारेली में फाग उत्सव की धूम, मना जश्न

अजमेर. शाबाश इंडिया

तीर्थराज नारेली स्थित ज्ञानोदय क्षेत्र में शांतिनाथ जिनालय महिला मंडल की सदस्यों द्वारा बड़े हर्षोल्लास के साथ 'फाग उत्सव' मनाया गया।

भक्तिमय शुरूआत और एकरूपता

मंडल की सदस्य रेणु पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत सर्वोदय कॉलोनी स्थित जिनालय के दर्शन के साथ हुई। सभी महिला सदस्य एक जैसे परिधान (वल्लाङ्ग्रे) में सुसज्जित होकर बस द्वारा नारेली पहुँचीं, जो आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम की होस्ट मंजू पाटनी के सानिध्य में सबसे पहले णमोकार मंत्र, भक्तामर स्तोत्र और मुनिसुव्रतनाथ भगवान के चालीसा का सामूहिक पाठ किया गया।

भजन, खेल और पुरस्कार

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में मधु जैन, अनामिका सुरलाया, बीना गदिया और साधना पाटनी ने मधुर भजनों की प्रस्तुतियां दीं, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। इसके पश्चात कनक छबड़ा और ज्योति सेठी द्वारा मनोरंजक गेम्स

खिलाए गए। सभी विजेता प्रतिभागियों को मंजू और रेणु पाटनी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अंताक्षरी और फाग का आनंद

उत्सव के दौरान महिलाओं ने चंदन का तिलक लगाकर और गुलाल उड़ाकर पारंपरिक रूप से फाग खेला। अंताक्षरी प्रतियोगिता के साथ हंसी-ठिठोली का दौर चला, जिसके बाद सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। कार्यक्रम के अंत में मंजू और रेणु पाटनी ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

ऐश्वर्या समूह महाविद्यालय में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमः 'ले इटिनेरांत' की प्रस्तुतियों से झलका उल्लास

उदयपुर. शाबाश इंडिया

ऐश्वर्या समूह महाविद्यालय, उदयपुर में कला, संस्कृति और वैश्विक समझ को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक भव्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फ्रांसीसी गायन समूह 'ले इटिनेरांत' मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहा। कार्यक्रम का औपचारिक आगाज अतिथियों के स्वागत एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। संस्थान की शैक्षणिक उपलब्धियों और सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए सहायक प्राध्यापक हर्षा मारवाल ने महाविद्यालय का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मोहम्मद शमील शेख और सहायक प्राध्यापक नितिशा महावर द्वारा किया गया। फ्रांसीसी कलाकारों ने अपनी मनमोहक और सुरम्य प्रस्तुतियों से उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। विद्यार्थियों और फैकल्टी सदस्यों ने विदेशी कलाकारों की कला की मुक्त कंठ से सराहना की। ऐश्वर्या फार्मेसी महाविद्यालय के प्राचार्य गजाराम सिरवी ने अपने संबोधन में कहा कि इस तरह के अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम विद्यार्थियों के वैश्विक दृष्टिकोण को विस्तृत करने में सहायक होते हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा– शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि कला और संस्कृति के माध्यम से व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी उतना ही आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में सहायक प्राध्यापक नितिशा महावर ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थी और शैक्षणिक स्टाफ उपस्थित रहा।

रिपोर्ट/फोटोः राकेश शर्मा 'राजदीप'

विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्णः रमेश वर्मा

जयपुर. शाबाश इंडिया। एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज, रामबाग सर्किल में भारत सरकार के युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय (माय भारत) के राष्ट्रीय सेवा योजना के निदेशक श्री रमेश वर्मा की अध्यक्षता में एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में राजस्थान राज्य में NSS कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए निदेशक श्री रमेश वर्मा ने राष्ट्र निर्माण में छात्र-छात्राओं की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने युवाओं को 'विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण हेतु आगे आने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे सरकार द्वारा चलाए जा रहे कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर स्वरोजगार की ओर कदम बढ़ाएं और देश के आर्थिक विकास में सहयोगी बनें। निदेशक महोदय ने युवाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ने हेतु प्रेरित करते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर जोर दियाः अधिक से अधिक युवा 'माय भारत पोर्टल' पर अपना पंजीकरण कराएं। पोर्टल पर आयोजित 'बजट क्विज 2026' में बढ़-चढ़कर भागीदारी करें। सभी शिक्षण संस्थानों में ठरर की स्वपोषी इकाइयों की स्थापना की जाए।

जैसी होगी दृष्टि, वैसी ही नजर आएगी सृष्टिः संत दिग्विजय रामजी

कान्हा की बाल लीलाओं ने मोहा मन, गूंजे 'गिरिराज धरण' के जयकारे

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

'जीवन में जैसी हमारी दृष्टि होगी, वैसी ही हमें सृष्टि नजर आएगी। यदि हमारी दृष्टि सकारात्मक और अच्छी है, तो हमें सब कुछ अच्छा दिखेगा, लेकिन यदि दृष्टि में बुराई है, तो हर वस्तु बुरी ही प्रतीत होगी।' ये विचार चित्तौड़गढ़ रामद्वारा के ओजस्वी वक्ता रामस्नेही संत श्री दिग्विजय रामजी महाराज ने व्यक्त किए। वे रोडवेज बस स्टैंड के पास अग्रवाल उत्सव भवन में स्व. श्रीमती गीतादेवी तोषनीवाल चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा के पांचवें दिन व्यास पीठ से श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे। महाराजश्री ने कहा कि जीवन में भजन और भोजन दोनों आवश्यक हैं, क्योंकि भजन आत्मा को और भोजन शरीर को शक्ति प्रदान करता है। उन्होंने 'मत कर काया का अभिमान' भजन के माध्यम से संदेश दिया कि काया और माया का कभी गर्व नहीं करना चाहिए, क्योंकि इनका कोई भरोसा नहीं है। प्रभु का आश्रय मिलने पर माया भी दासी बन जाती है। कथा के दौरान भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत धारण करने के प्रसंग का जीवंत वर्णन किया गया। संत ने बताया कि कैसे कान्हा ने ब्रजवासियों को गिरिराज पूजन की प्रेरणा देकर देवराज इंद्र के अहंकार को नष्ट किया। जब भगवान ने अपनी कनिष्ठा उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठाया, तो वे 'गिरिराज धरण' कहलाए। इस प्रसंग के दौरान पूरा पांडाल जयकारों से गूंज उठा। इस अवसर पर छप्पन भोग और गिरिराज पर्वत की सजीव झांकी सजाई गई।

भक्ति रस में डूबे श्रद्धालु

कथा के दौरान भजनों की सरिता बही। 'आजा म्हारा कानोडा', 'ओ मैया तेरे द्वारे बाला जोगी आयो' और 'द्वारिका को नाथ म्हारा राजा रणछोड़जी' जैसे भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमने लगे। श्रीनाथजी की स्तुति में गाए गए भजनों ने वातावरण को पूरी तरह कृष्णमय कर दिया। श्री गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति के अध्यक्ष उदयलाल समदानी ने व्यास पीठ का आशीर्वाद लिया। मंच संचालन पंडित अशोक व्यास ने किया। छठे दिन शनिवार को उद्धव चरित्र एवं रुक्मणी विवाह का प्रसंग सुनाया जाएगा। 7 फरवरी, शनिवार शाम 7 बजे से राष्ट्रीय संत डॉ. मिथिलेश नागर (नैनौराधाम) के मुखारबिंद से संगीतमय सुंदरकांड का भव्य आयोजन होगा।

अरावली में संतुलित विकास की आवश्यकता, केवल 1 प्रतिशत क्षेत्र में हो रहा नियंत्रित खनन: यूनाइटेड फेडरेशन

वैज्ञानिक खनन से ही पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक प्रगति संभव: खनन उद्यमियों का पक्ष

उदयपुर. शाबश इंडिया

यूनाइटेड फेडरेशन ऑफ मिनरल प्रोड्यूसर्स ने अरावली पर्वतमाला में खनन, पर्यावरण संरक्षण और संतुलित विकास के मुद्दों पर अपना पक्ष रखते हुए कहा कि अरावली का लगभग 99 प्रतिशत क्षेत्र खनन से पूरी तरह सुरक्षित है। वर्तमान में इसके मात्र 1.007 प्रतिशत हिस्से में ही वैधानिक एवं वैज्ञानिक खनन गतिविधियां संचालित हो रही हैं, जो राज्य के राजस्व और रोजगार में रीढ़ की हड्डी के समान हैं। शुक्रवार को आयोजित प्रेस वार्ता में संगठन के संरक्षक अरविंद सिंघल, मुख्य सलाहकार जे.पी. अग्रवाल, हिंदुस्तान जिंक के पूर्व सीईओ अखिलेश जोशी, अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह सोनी, सचिव डॉ. हितांशु कौशल और सीनियर वाइस प्रेसिडेंट केजर अली कुराबड़वाला ने स्पष्ट किया कि पहाड़ियों को नुकसान पहुँचाने वाले अवैध खनन, अवैध रिसॉर्ट और होटलों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। लेकिन, अवैध गतिविधियों की आड़ में नियम सम्मत चल रहे 'वैध खनन' को निशाना बनाना राज्य के आर्थिक हितों के खिलाफ है। अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह सोनी ने बताया कि सर्वोच्च न्यायालय के 20 नवंबर 2025 के निर्णय में वैधानिक खनन को अनुमति दी गई थी, परंतु 29 दिसंबर 2025 के बाद से स्थिति अनिश्चित हो गई है। 21 जनवरी 2026 की सुनवाई के बाद भी खनन पट्टों के नवीनीकरण और विस्तार पर स्पष्ट दिशा-निर्देश न मिलने से उद्योग ठप होने की कगार पर हैं, जिससे लाखों लोगों का रोजगार संकट में है।

खनिज संपदा: राजस्थान 58 प्रकार के खनिजों के साथ देश का अग्रणी राज्य है। राज्य के कुल क्षेत्रफल का मात्र 0.68% हिस्सा ही खनन क्षेत्र के अधीन है।

राजस्व: वर्ष 2024-25 में प्राप्त 9,228 करोड़ रुपये के राजस्व में 70% से अधिक योगदान अरावली क्षेत्र का है।

रोजगार: यह क्षेत्र करीब 35 लाख लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है।

पूर्व सीईओ अखिलेश जोशी ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति खनिजों के बिना संभव नहीं है। संगठन ने सुझाव दिया कि एक वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर अरावली में अधिकतम 4 प्रतिशत तक सीमित और नियंत्रित खनन की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे पर्यावरण संतुलन भी बना रहेगा और देश के आर्थिक हित भी सुरक्षित रहेंगे।

रिपोर्ट/फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'

उदयपुर में 'मेवाड़ होंडा' शोरूम का भव्य शुभारंभ, ग्राहकों को मिलेंगी आधुनिक सुविधाएं

2030 तक 10 नए मॉडल लॉन्च करेगी होंडा, सेफ्टी और 'मेक इन इंडिया' पर मुख्य फोकस

उदयपुर. शाबश इंडिया। प्रसिद्ध चार पहिया वाहन निर्माता कंपनी होंडा कार्स ने अपने ग्राहकों को विश्वस्तरीय सुविधाएं और बेहतर अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से मादड़ी इंडस्ट्रियल एरिया में 'मेवाड़ होंडा' शोरूम का उद्घाटन किया। शुक्रवार को आयोजित इस समारोह का शुभारंभ होंडा कार्स के सेल्स एवं मार्केटिंग वाइस प्रेसिडेंट कुणाल बहल, नेशनल सेल्स हेड निखिल शुक्ला एवं डीलर राजेंद्र मीणा ने फीता काटकर किया। समारोह को संबोधित करते हुए मार्केटिंग हेड कुणाल बहल ने कहा कि उदयपुर में 'मेवाड़ होंडा' की शुरूआत से न केवल शहर बल्कि पूरे संभाग के ग्राहकों को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि किसी भी कंपनी की सफलता उसके मजबूत बिजनेस पार्टनर्स पर टिकी होती है और उदयपुर में होंडा को एक सशक्त नेतृत्व मिला है। राजस्थान में कंपनी के वर्तमान में 12 डीलर्स संचालित हो रहे हैं।

कुणाल बहल ने कंपनी की आगामी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया: होंडा वर्ष 2030 तक भारतीय बाजार में 10 नए मॉडल्स उतारने की तैयारी कर रही है। होंडा की पहली इलेक्ट्रिक कार पूरी तरह 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत भारत में निर्मित है। पेट्रोल सेगमेंट में होंडा की बाजार हिस्सेदारी वर्तमान में 10.6 प्रतिशत है। अमेरिका और जापान के बाद भारत, होंडा के लिए दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण बाजार है। इस अवसर पर जोनल मार्केटिंग हेड अनुराग सिंह, हेड डीलर डेवलपमेंट सुनील भारद्वाज, नॉर्थ जोन सेल्स हेड लोकेश गुप्ता सहित मेवाड़ होंडा के राजेंद्र कुमार मीणा, निकिता मीणा, विकास मीणा, रामनिवास मीणा एवं शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

-रिपोर्ट/फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'

झीलों की नगरी में फैशन ज्वेलरी का नया ठिकाना, आज खुलेगा 'श्रीनाथ ज्वेल्स'

उदयपुर. शाबश इंडिया। झीलों के शहर उदयपुर में फैशन ज्वेलरी प्रेमियों के लिए अब एक नया और भव्य विकल्प उपलब्ध होगा। शहर के मध्य शनिवार दोपहर 2 बजे 'श्रीनाथ ज्वेल्स' शोरूम का विधिवत उद्घाटन मुख्य अतिथि हिमांशु सिंह राजावत द्वारा किया जाएगा। शोरूम संचालक प्रहलाद त्रिवेदी ने बताया कि इस आर्टिफिशियल ज्वेलरी शोरूम की मुख्य विशेषता बंगाल के अनुभवी कारीगरों द्वारा तैयार किए गए विशेष आभूषण हैं। उन्होंने साझा किया कि वे पिछले 35 वर्षों से बंगाल में इसी क्षेत्र में सक्रिय हैं। उदयपुर में शोरूम खोलने की उनकी दीर्घकालिक योजना अब साकार हो रही है, जहाँ ग्राहकों को बंगाल की बारीक नक्काशी और राजस्थानी पारंपरिक डिजाइनों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलेगा। शोरूम में फैशन ज्वेलरी की विस्तृत रेंज उपलब्ध रहेगी, जिसमें प्रमुख हैं: नेकलेस, पेंडेंट और तूसी, इयररिंग्स, बैंगल्स और ब्रेसलेट, मांग टीका, मंगलसूत्र और नोज रिंग, प्रीमियम अमेरिकन डायमंड ज्वेलर। लोकेश त्रिवेदी ने बताया कि शोरूम में ज्वेलरी होलसेल एवं रिटेल दोनों ही दामों पर उपलब्ध होगी। नेकलेस की रेंज मात्र 700 रुपये से शुरू होकर 4,000 रुपये तक रखी गई है। ग्राहकों के लिए विशेष सौगात के रूप में, उद्घाटन अवसर पर प्रत्येक आइटम की खरीद पर 20 प्रतिशत की भारी छूट दी जाएगी।

- रिपोर्ट/फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'

विरासत से विकसित भारत: संस्कृति मंत्रालय का 'ज्ञान भारतम' और राजस्थान का विराट स्वरूप

कालजयी विरासत, आधुनिक विधान: मोदी-शेखावत युग में 'ज्ञान भारतम' से विश्व गुरु बनता स्वर्णिम भारत

डॉ नयन प्रकाश गांधी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के मार्गदर्शन में, 'ज्ञान भारतम' मिशन' केवल एक तकनीकी परियोजना नहीं, बल्कि एक 'बौद्धिक महायज्ञ' है। यह स्वर्णिम भारत की वह नींव है, जहाँ प्राचीन मेधा और आधुनिक नवाचार मिलकर 'विकसित भारत ₹2047₹ का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। इस अंक का मुख्य आलेख इसी सांस्कृतिक पुनर्जागरण की गाथा को समर्पित है।भारत की आत्मा उसके ज्ञान-कोष में बसती है। सदियों से हमारे पूर्वजों ने जिन पांडुलिपियों में ब्रह्मांड के रहस्यों को सहेजा, वे आज 'ज्ञान भारतम' मिशन के माध्यम से एक नए अवतार में हमारे सामने हैं। राजस्थान ने इस मिशन के तहत 5.5 लाख पांडुलिपियों को डिजिटल सुरक्षा कवच प्रदान कर यह सिद्ध कर दिया है कि हम अपनी जड़ों के प्रति कितने सजग हैं। सांस्कृतिक पुनर्जागरण का उदय राजस्थान की मरुधरा केवल अदम्य साहस, ऐतिहासिक दुर्गों और बलिदान की गाथाओं की ही साक्षी नहीं रही है, बल्कि यह सदियों से असीम ज्ञान और पांडुलिपियों का भी एक अक्षुण्ण महाकोष रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी युग में भारत अपनी खोई हुई सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित कर 'विश्व गुरु' बनने की ओर अग्रसर है। इसी संकल्प को धरातल पर उतारते हुए, केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा घोषित 'ज्ञान भारतम मिशन' प्रदेश के विशाल हस्तलिखित ज्ञान भंडार के लिए नई संजीवनी सिद्ध हो रहा है। संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत के कुशल नेतृत्व में यह मिशन न केवल हमारी प्राचीन मेधा को संरक्षित कर रहा है, बल्कि 'विकसित भारत 2047' के राष्ट्रीय विजन को एक सुदृढ़ आधार भी प्रदान कर रहा है। रणनीतिक ढांचा और राजस्थान का गौरव 491.66 करोड़ रुपए के राष्ट्रीय बजट के साथ संचालित यह मिशन तकनीक और परंपरा का एक अकल्पनीय संगम है। राजस्थान का इस मिशन में सक्रिय योगदान यह सिद्ध करता है कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बचाने के लिए कितने गंभीर हैं। राज्य के पाँच प्रतिष्ठित केंद्रों को इस राष्ट्रव्यापी नेटवर्क में शामिल करना प्रदेश की समृद्ध पांडुलिपि परंपरा के प्रति एक बड़ा सम्मान है। जयपुर स्थित 'राजस्थान संस्कृत अकादमी' और 'विश्व गुरुदीप आश्रम शोध संस्थान' जहाँ समूह केंद्रों के रूप में नेतृत्व कर रहे हैं, वहीं जोधपुर का 'प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान', बीकानेर का 'अभय जैन ग्रंथालय' और जयपुर का 'पद्मश्री नारायण दास संस्थान' स्वतंत्र केंद्रों के रूप में इस सांस्कृतिक महायज्ञ को गति दे रहे हैं। इस मिशन के तहत 400 से 600 डीपीआई की उच्च क्षमता वाली स्कैनिंग और ठंडी रोशनी वाले विशेष स्कैनर्स का उपयोग किया जा रहा है। यह सुनिश्चित करता है कि सदियों पुराने ताड़पत्रों और प्राचीन कागजों पर अंकित मूल प्रतियों को बिना किसी भौतिक क्षति के डिजिटल रूप दिया जा सके। जोधपुर और बीकानेर के भंडारों में छिपे हुए ये अनमोल ज्ञान-रत्न अब एआई आधारित पोर्टल के माध्यम से पूरी दुनिया के लिए सुलभ हो रहे हैं। यह हमारे पूर्वजों के ज्ञान के प्रति हमारी कृतज्ञता और भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी का सफल निर्वहन है।

प्रगति के आँकड़े: देश का नेतृत्व करता राजस्थान राजस्थान के डिजिटलीकरण के आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि प्रदेश अपनी प्राचीन मेधा को सहेजने में देश का नेतृत्व कर रहा है। अब तक राज्य के विभिन्न केंद्रों से 5.5 लाख से अधिक पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया जा चुका है:

जयपुर केंद्र (3.2 लाख+): यहाँ संस्कृत, ज्योतिष और आयुर्वेद जैसे गूढ़ विषयों के प्रामाणिक साक्ष्य सहेजे गए हैं।

जोधपुर केंद्र (1.5 लाख+): यहाँ डिंगल, पिंगल और प्राचीन मारवाड़ी साहित्य के माध्यम से इतिहास को जीवंत रखा जा रहा है।

बीकानेर केंद्र (80,000+): यहाँ प्राचीन जैन आगम और सूक्ष्म चित्रकला का अद्भुत संगम सुरक्षित है।

निष्कर्ष

स्वर्णिम भारत की आधारशिला यह संपूर्ण डेटा सिद्ध करता है कि राजस्थान केवल अपनी भौगोलिक सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि अपने डिजिटल ज्ञान-कोष के कारण भी विश्व के शैक्षिक मानचित्र पर प्रमुखता से उभर रहा है। 'ज्ञान भारतम' मिशन के माध्यम से राजस्थान का प्राचीन ज्ञान अब डिजिटल युग की नई भाषा में पूरी दुनिया को प्रेरित करेगा। ऋण का उपभोग नहीं, बल्कि भविष्य की नींव रखते हुए यह मिशन 'स्वर्णिम भारत' के निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा, जहाँ तकनीक हमारी संस्कृति की ढाल बनकर उभरी है।

लेखक परिचय

डॉ. नयन प्रकाश गांधी,कोटा राजस्थान

लेखक भारत सरकार के अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई विश्वविद्यालय के एलुमनाई हैं। वे पूर्व में विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी सामाजिक परियोजनाओं में सलाहकार रह चुके हैं। सोशल डेवलपमेंट और सांस्कृतिक विषयों पर उनके आलेख देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं।

संपर्क सूत्र : 91-8107055398

भवानी निकेतन में 108 कुंडात्मक श्रीराम महायज्ञ हेतु भूमि पूजन एवं ध्वजा स्थापना संपन्न

21 फरवरी से 1 मार्च तक आयोजित होगा नवदिवसीय कोटी होमात्मक महायज्ञ

जयपुर. शाबाश इंडिया

सीकर रोड स्थित भवानी निकेतन (गेट नंबर 6) के विशाल प्रांगण में आयोजित होने वाले 'कोटी होमात्मक नवदिवसीय 108 कुंडात्मक श्री राम महायज्ञ' के उपलक्ष्य में शुक्रवार को विधिवत मंत्रोच्चार के साथ भूमि पूजन एवं ध्वजा स्थापना कार्यक्रम संपन्न हुआ। सियाराम बाबा की बगीची के महंत एवं यज्ञकर्ता श्री वैष्णव हरिशंकर दास जी महाराज (वेदांती जी) ने बताया कि यह महायज्ञ 21 फरवरी से 1 मार्च 2026 तक आयोजित किया जाएगा। भूमि पूजन के अवसर पर ब्रह्म पीठाधीश्वर स्वामी श्री रामरतन देवाचार्य जी महाराज (डाकोर, अयोध्या धाम), जगतगुरु धन्ना पीठाधीश्वर बजरंग देवाचार्य जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी बालमुकुंदाचार्य जी महाराज एवं पापड़ वाले हनुमान जी के महंत श्री रामसेवक दास जी महाराज सहित अनेक विशिष्ट संतों और अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। महायज्ञ के शुभारंभ पर 21 फरवरी को दोपहर 2:00 बजे 'सन मून टावर' (रोड नंबर 1) से भवानी निकेतन तक महिलाओं द्वारा विशाल मंगल कलश यात्रा निकाली जाएगी। यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली हवन सामग्री पूर्णतया शुद्ध होगी और देशी गौ माता के घी से आहुतियां प्रदान की जाएंगी। महायज्ञ प्रतिदिन प्रातः 8:00 से 11:00 बजे और दोपहर 2:00 से 5:00 बजे तक आयोजित होगा। महायज्ञ के दौरान परम पूज्य संत श्री निर्मल दास जी महाराज द्वारा 'भक्तमाल कथा' का वाचन किया जाएगा।

पदमपुरा में होगा संतों का महासंगम

आचार्य वर्धमान सागर और आचार्य प्रसन्न सागर महाराज का होगा मंगल प्रवेश

पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियों के बीच निवाई जैन समाज ने संतों को भेंट किया श्रीफल

निवाई/पदमपुरा. शाबाश इंडिया

राजस्थान की धर्मधरा पर इन दिनों आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हो रहा है। वात्सल्य वारिधि, पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ पद विहार करते हुए शुक्रवार को शीतला माता पहुँचे, जहाँ उनकी आहार चर्या संपन्न हुई। आचार्य श्री आगामी 8 फरवरी 2026 को अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में मंगल प्रवेश करेंगे, जहाँ उनके सानिध्य में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन होगा।

पदमपुरा में पंचकल्याणक महोत्सव की धूम

जैन धर्म प्रचारक विमल जौंला और विमल पाटनी ने बताया कि पदमपुरा में 18 से 22 फरवरी तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महोत्सव में देशभर से हजारों की संख्या में श्रावक और श्रेष्ठी जन सम्मिलित होंगे। आचार्य वर्धमान सागर महाराज इस पूरे महोत्सव के दौरान अपना पावन सानिध्य प्रदान करेंगे।

अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज को निवाई का आमंत्रण

निवाई के जैन सोशल ग्रुप 'प्रज्ञा' और वात्सल्य भक्त परिवार के एक जत्थे ने पद विहार के दौरान संतों की वैयावृति कर पुण्य लाभ अर्जित किया। समाज के प्रतिनिधिमंडल ने अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज को श्रीफल भेंट कर निवाई में अल्प प्रवास के लिए

अनुनय-विनय किया। आचार्य श्री ने निवाई के लिए अपनी संभावित स्वीकृति प्रदान की है।

आचार्य प्रसन्न सागर महाराज का प्रवास कार्यक्रम:

7 फरवरी: सिद्धार्थ नगर एवं ईपी
8 फरवरी: बीलवा एवं शिवदासपुरा
9 फरवरी: अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में मंगल प्रवेश

आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज से भी लिया आशीर्वाद: इसी क्रम में निवाई जैन समाज के महावीर प्रसाद पराणा, महेंद्र चंवरिया, ज्ञानचंद सोगानी सहित अन्य सदस्यों ने चाकसू पहुँचकर आचार्य श्री प्रज्ञा सागर महाराज को श्रीफल भेंट किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान समाज के विमल बड़ागाँव, कमलेश झिलाय और सुनील भाणजा सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जयपुर में आज 'हर माह एक उपवास' का महाकुंभ

राज्यपाल करेंगे अध्यक्षता, मुख्यमंत्री होंगे मुख्य अतिथि। अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज और बाबा रामदेव की प्रेरणा से आध्यात्मिक जन-आंदोलन का द्वितीय सामूहिक आयोजन आज

जयपुर. शाबाश इंडिया। पिंक सिटी के एंटरटेनमेंट पैराडाइज (ईपी) में आज एक नवीन आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होगा। अंतर्मना धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास तथा पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार, 7 फरवरी को 'हर माह एक उपवास' कार्यक्रम का द्वितीय भव्य सामूहिक आयोजन होने जा रहा है। यह पहल आत्मसंयम, योग और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है।

आध्यात्मिक संगम और विशिष्ट अतिथि

यह ऐतिहासिक आयोजन राष्ट्रसंत अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज एवं योग ऋषि बाबा रामदेव की पावन प्रेरणा से संपन्न हो रहा है। कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे समारोह की अध्यक्षता करेंगे, जबकि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे।

दिल्ली और गुड़गांव के बाद अब जयपुर की बारी

फास्टिंग फाउंडेशन (जयपुर चैप्टर) के अध्यक्ष राजीव जैन (गाजियाबाद) एवं सचिव आलोक जैन ने बताया कि इस श्रृंखला का शंखनाद नई दिल्ली के भारत मंडपम से हुआ था। गुड़गांव में प्रथम सफल आयोजन के बाद अब जयपुर में दोपहर 2:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक सेंट्रल लॉन में यह द्वितीय ऐतिहासिक सभा आयोजित की जा रही है।

कविता और साधना का समन्वय

इस अवसर पर प्रासंगिक कवि सम्मेलन का भी आयोजन होगा, जिसमें देश के विख्यात कवि उपवास और साधना के महत्व को अपनी वाणी देंगे।

ह्रदय सुरक्षा की पहल

सरेड़ी बड़ी विद्यालय के गुरुजनों को वितरित किए गए 'जीवन रक्षक किट'

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर ने शिक्षकों को सिखाए हार्ट अटैक के समय प्राथमिक उपचार के गुर

परतापुर/सरेड़ी बड़ी. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा 'ह्रदय सुरक्षा प्रोजेक्ट' के अंतर्गत महात्मा गांधी सरकारी विद्यालय, सरेड़ी बड़ी में एक विशेष स्वास्थ्य जागरूकता एवं किट वितरण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के 31 गुरुजनों को आपातकालीन 'जीवन रक्षक टैबलेट किट' वितरित किए गए।

हार्ट अटैक की स्थिति में संजीवनी है यह किट

मुख्य वक्ता एवं संस्था के इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल) अजीत कोठिया ने हार्ट अटैक की बढ़ती घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए इस किट की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह किट रोगी को अस्पताल पहुँचने तक सुरक्षा कवच प्रदान करती है। यदि किसी व्यक्ति को सीने में तेज दर्द हो या ह्रदय घात जैसी स्थिति लगे, तो किट में उपलब्ध ये तीन औषधियाँ प्राण रक्षक साबित होती हैं:

एस्प्रिन (150 मिग्रा) 2. सोर्बिट्रेट (10 मिग्रा) 3. अटॉर्वेस्टेटिन (80 मिग्रा)

अतिथियों का स्वागत और सम्मान

समारोह की अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्रीमती मुकुल शुक्ला ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अजीत कोठिया थे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में रिम्पी मैम और गाज़ियाबाद से पधारे दिनेश पाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधानाचार्य मुकुल शुक्ला ने विद्यालय परिवार की ओर से महावीर इंटरनेशनल के पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर और दुपट्टा ओढ़ाकर भावभीना स्वागत किया।

जैन समाज में वर्चस्व की जंग: आध्यात्मिक पतन की ओर बढ़ते कदम

नितिन जैन, पलवल (हरियाणा)

जैन धर्म की मौलिक पहचान त्याग, वैराग्य और अहिंसा से है। साधु-संत इस धर्म की आत्मा माने जाते हैं, जिनका जीवन स्वयं में अहंकार से मुक्ति और अपरिग्रह का जीवंत संदेश होता है। किंतु वर्तमान में जैन समाज के भीतर एक ऐसा कड़वा सच पनप रहा है, जिसे नजरअंदाज करना आत्मघाती सिद्ध हो सकता है। यह संकट है—साधुओं के बीच बढ़ती वर्चस्व की जंग। यह शस्त्रों का युद्ध नहीं, बल्कि मौन प्रतिस्पर्धा, सूक्ष्म राजनीति और अहं की वह टकराहट है, जो समाज को भीतर ही भीतर खोखला कर रही है।

तप बनाम प्रदर्शन

बदलता पैमाना आज साधु-संतों की पहचान उनके तप और आगमिक मर्यादा के स्थान पर उनके 'प्रभाव क्षेत्र' से होने लगी है। किस संघ का चातुर्मास कितना भव्य है, प्रवचन में कितनी भीड़ है और पीछे कितना धनबल खड़ा है— यही आज श्रेष्ठता के नए पैमाने बन गए हैं। यह प्रवृत्ति न केवल चिंताजनक है, बल्कि जैन दर्शन की मूल अवधारणा के साथ विश्वासघात भी है।

मर्यादाहीन संवाद और कानूनी विवाद

वर्चस्व की यह जंग अब गुप्त नहीं रही। कई स्थानों पर प्रवचन के मंच आरोप-प्रत्यारोप के अखाड़े बन चुके हैं। आत्मशुद्धि का माध्यम होने वाली वाणी अब अमर्यादित भाषा में परिवर्तित हो रही है। दुखद यह है कि अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले संतों के नाम अब न्यायालयों, पुलिस थानों और कानूनी विवादों से जुड़ने लगे हैं। कहीं-कहीं तो धरना-प्रदर्शन और पुतला दहन जैसी घटनाएं भी सामने आई हैं, जो उस समाज के लिए कलंक हैं जो सूक्ष्म हिंसा की कल्पना से भी कांप उठता था।

श्रावक समाज की भूमिका

आग में घी का कार्य इस संघर्ष में एक बड़ा उत्तरदायित्व उन श्रावकों का भी है, जो अपने

व्यक्तिगत स्वार्थ और प्रतिष्ठा के लिए साधुओं के बीच की खाई को और चौड़ा कर रहे हैं। साधु को 'साधना' का केंद्र बनाने के बजाय 'सत्ता' का केंद्र बना दिया गया है। परिणामस्वरूप, श्रद्धालु समाज अब 'पक्षकार समाज' में बदलता जा रहा है। युवा पीढ़ी के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि मार्गदर्शक ही संयम खो बैठें, तो धर्म का भविष्य किसके हाथों में है? समय है आत्ममंथन का साधु कोई राजनेता नहीं हैं जिनके बीच सत्ता संघर्ष को स्वाभाविक मान लिया जाए। साधु का धर्म जोड़ना है, तोड़ना नहीं। यदि अहंकार और प्रभाव की यह दौड़ नहीं रुकी, तो इसका परिणाम केवल किसी एक गुट की हार-जीत नहीं होगा, बल्कि पूरे जैन समाज की आध्यात्मिक पराजय होगी। अब समय आ गया है कि साधु-संत गंभीर आत्ममंथन करें और श्रावक समाज भी अपनी भूमिका पर विचार करे। साधु का मूल्यांकन उनकी आगमिक निष्ठा और आचरण से होना चाहिए, न कि उनके समर्थकों की संख्या या मंच की भव्यता से। जैन धर्म की शक्ति प्रदर्शन में नहीं, बल्कि मौन, संयम और समन्वय में निहित है।

प्रकृति के करीब पहुँचे सुबोध स्कूल के विद्यार्थी: 'इंडियन बर्डिंग फेयर' में पक्षियों और कीटों के संसार को जाना

विशेषज्ञों ने समझाया पर्यावरण में कीड़ों का महत्व; दूरबीन से निखारे विदेशी जलपक्षियों के रंग

जयपुर. शाबाश इंडिया

आमेर रोड स्थित मानसागर झील के तट पर आयोजित 29वें इंडियन बर्डिंग फेयर में शुक्रवार को सुबोध पब्लिक स्कूल, सांगानेर एयरपोर्ट के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक भ्रमण किया। 6 और 7 फरवरी 2026 को आयोजित इस दो दिवसीय मेले में इस वर्ष पक्षियों के साथ-साथ 'कीट संरक्षण' (इंसेक्ट कंजर्वेशन) को मुख्य विषय के रूप में रखा गया है।

दूरबीन से देखा पक्षियों का बसेरा

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने पक्षी विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में दूरबीन और टेलिस्कोप की सहायता से मानसागर झील में विचरण कर रहे पक्षियों को नजदीक से निहारा। विशेषज्ञों ने जानकारी दी कि मानसागर झील के आसपास लगभग 155 प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं, जिनमें सर्दियों के मौसम में दूर-देशों से आने वाले विदेशी जलपक्षी मुख्य आकर्षण होते हैं।

कीटों के बिना अधूरा है जीवन का चक्र

इस वर्ष मेले का विशेष आकर्षण कीटों पर केंद्रित प्रदर्शनी रही। विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को बताया कि कीड़े न केवल परागण (पॉलिनेशन) और खेती के लिए अनिवार्य हैं, बल्कि वे पूरी खाद्य श्रृंखला का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यदि कीटों का अस्तित्व समाप्त हुआ, तो न पक्षी बचेंगे और न ही मानव जीवन संतुलित रह पाएगा। मेले के दौरान 'ओपन सेशन' का आयोजन किया गया, जहाँ विद्यार्थियों ने विशेषज्ञों से अपनी जिज्ञासाएं शांत कीं। बच्चों ने अपने घर और स्कूल परिसर में

देखे गए पक्षियों व कीटों के अनुभव साझा किए। प्रश्नोत्तरी में सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया। विद्यार्थियों ने मेले में विभिन्न एनजीओ स्टॉल, जागरूकता प्रदर्शनियों और चित्रकला प्रतियोगिता का अवलोकन कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। स्कूल प्रबंधन के अनुसार, यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा, जिससे उनमें वन्यजीवों के प्रति संवेदनशीलता और संरक्षण की भावना विकसित हुई।

आचार्यों का महामिलन: चाकसू में प्रज्ञा सागर महाराज ने की आचार्य वर्धमान सागर की भक्ति, पदमपुरा की ओर बढ़ा संघ

तीर्थंकरों की पावन भूमि से प्राप्त होती है अक्षय निधि: आचार्य श्री वर्धमान सागर

चाकसू/शिवदासपुरा. शाबाश इंडिया

वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ का अतिशय क्षेत्र अक्षय निधि आदिश्वर धाम, चाकसू से भव्य मंगल विहार हुआ। इस अवसर पर चाकसू के प्राचीन जैन मंदिर से आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज ने पुनः आदिश्वर धाम पहुँचकर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी की आचार्य भक्ति की और उनके चरणों की वंदना की।

भक्ति और पंचामृत अभिषेक

दोनों आचार्यों के पावन सानिध्य में श्रीजी का पंचामृत अभिषेक संपन्न हुआ। इस दौरान श्रद्धालुओं में भारी उत्साह देखा गया। राजेश पंचोलिया के अनुसार, आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने अपने आशीर्वचन में तीर्थों की महिमा बताते हुए कहा कि सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र और तीर्थंकरों की पंचकल्याणक भूमि अत्यंत पवित्र होती है। इन क्षेत्रों की वंदना से जीव को पुण्य रूपी 'अक्षय निधि' प्राप्त होती है।

आदिश्वर भगवान का उपदेश

आचार्य श्री ने भगवान आदिनाथ (आदिश्वर) के योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने भोग भूमि के पश्चात प्रजा को बेहतर जीवन यापन के लिए असि, मसि, कृषि, शिल्प, कला और वाणिज्य का उपदेश दिया। साथ ही अपनी पुत्रियों के माध्यम से अंक और लिपि का ज्ञान संसार को प्रदान किया। हमें अपने इस पुण्य को अक्षय बनाए रखना चाहिए।

मंगल विदाई और पद विहार

6 फरवरी को प्रातः आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज ने ससंघ आचार्य वर्धमान सागर जी को पदमपुरा विहार के लिए मंगल विदाई दी। प्रज्ञा सागर जी ने चरण वंदना और परिक्रमा कर संघ को विदा किया, जिसके पश्चात संघ के अन्य साधुओं ने भी भक्ति की।

विहार कार्यक्रम

6 फरवरी: चाकसू से विहार कर संघ शीतला माता मंदिर पहुँचा, जहाँ आहार चर्या हुई। दोपहर में 6.3 किलोमीटर का विहार कर शिवदासपुरा टोल के निकट रात्रि विश्राम हुआ। 7 फरवरी: प्रातः 3.3 किलोमीटर विहार कर आचार्य संघ की आहार चर्या महात्मा गांधी इंजीनियरिंग कॉलेज, शिवदासपुरा में होगी।

8 फरवरी को होगा पदमपुरा में भव्य प्रवेश

ब्रह्मचारी गज्जू भैया और परमीत भद्रावती ने बताया कि 31 साधुओं के विशाल संघ के साथ आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का 8 फरवरी दोपहर को अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) में मंगल प्रवेश होगा। वहाँ पूर्व से ही विराजित आर्यिका श्री स्वस्ति भूषण माताजी, क्षेत्र कमेटी और पंचकल्याणक समिति द्वारा आचार्य संघ की भव्य अगवानी की जाएगी।

सेहत की नींव: जंक फूड की लत बच्चों के लिए खतरनाक, पारंपरिक आहार अपनाएं

रोटरी क्लब बापू नगर के 'भारत को जानिए' कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को किया जागरूक

जयपुर. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब बापू नगर की ओर से 'भारत को जानिए' श्रृंखला के अंतर्गत जवाहर नगर स्थित डीएवी सेंट्रल सीनियर स्कूल में एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। 'भारतीय भोजन परंपराएं और स्वस्थ जीवन में उनकी भूमिका' विषय पर केंद्रित इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को जंक फूड से होने वाले गंभीर दुष्प्रभावों के प्रति सचेत किया।

मोटापा और बीमारियों का जड़ है जंक फूड

प्रसिद्ध मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉ. सुनील दंड ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि वर्तमान में बच्चे घर के पौष्टिक भोजन के स्थान पर पिज्जा और बर्गर जैसे जंक फूड को प्राथमिकता दे रहे हैं, जो भविष्य में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहा है। डॉ. दंड ने यूनिसेफ की रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि विश्व स्तर पर 188 मिलियन से अधिक बच्चे मोटापे का शिकार हैं, जिसका मुख्य कारण अस्वस्थ खान-पान है। उन्होंने चेतावनी दी कि जंक फूड के कारण बच्चों में टाइप-

2 डायबिटीज, हृदय रोग और मानसिक विकास में बाधा जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। उन्होंने अभिभावकों को सलाह दी कि वे बच्चों को घर का बना ताजा भोजन, फल और सब्जियां खाने के लिए प्रेरित करें।

स्वाद के फेर में स्वास्थ्य से समझौता

सेलिब्रिटी शेफ रवि अग्रवाल ने कहा कि आज के व्यस्त जीवन में मोमोज और चाऊमीन जैसे खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हो रहे हैं। स्वाद और सुलभता के कारण बच्चे इनकी ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन इसकी कीमत उन्हें पाचन तंत्र की खराबी और शुगर जैसी बीमारियों से चुकानी पड़ती है। उन्होंने साबुत अनाज और

पारंपरिक भारतीय व्यंजनों को बच्चों की थाली में शामिल करने पर जोर दिया।

महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण

रोटरी क्लब की अध्यक्षा मीता माथुर ने सेमिनार को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों के खान-पान की आदतों को सुधारने में महिलाओं की विशेष जिम्मेदारी है। स्वस्थ खान-पान की शुरूआत घर की रसोई से ही होनी चाहिए।
प्रारंभ में कार्यक्रम समन्वयक बीबी शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि इस श्रृंखला के तहत अब तक विभिन्न स्कूलों में 6 सेमिनार आयोजित किए जा चुके हैं। कार्यक्रम के अंत में श्री आर.एस. गुप्ता ने सभी का धन्यवाद और आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय पैरा थ्रोबॉल टूर्नामेंट का भव्य समापन: आंध्र प्रदेश और झारखंड के सिर सजा जीत का ताज

झुंझुनूं के सिंघानिया विश्वविद्यालय में संपन्न हुई तीन दिवसीय प्रतियोगिता; अप्रैल में मलेशिया जाने वाली एशियाई टीम का भी हुआ चयन

जयपुर/झुंझुनूं. शाबाश इंडिया

शारीरिक बाधाओं को मात देकर खेलों के मैदान में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाले पैरा-खिलाड़ियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय 'राष्ट्रीय स्तरीय पैरा थ्रोबॉल टूर्नामेंट' का समापन शुक्रवार को झुंझुनूं जिले के सिंघानिया विश्वविद्यालय परिसर में हुआ। वर्ल्ड पैरा थ्रोबॉल फेडरेशन एवं द पैरा थ्रोबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में आंध्र प्रदेश और महिला वर्ग में झारखंड ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय खिताब अपने नाम किया।

प्रतियोगिता का परिणाम और उपलब्धियाँ

इस राष्ट्रीय टूर्नामेंट में देश के विभिन्न राज्यों—आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, हरियाणा, राजस्थान और झारखंड सहित 18 टीमों (9 पुरुष व 9 महिला वर्ग) के लगभग 300 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

पुरुष वर्ग: कड़े मुकाबले के बाद आंध्र प्रदेश की टीम विजेता बनी, जबकि तेलंगाना को उपविजेता (द्वितीय स्थान) और हरियाणा को तीसरा स्थान मिला। आंध्र प्रदेश के बी. पवन कुमार को उनके असाधारण प्रदर्शन के लिए पुरुष वर्ग में 'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' चुना गया।

महिला वर्ग: महिला वर्ग के फाइनल मुकाबले में झारखंड ने बाजी मारी और प्रथम स्थान प्राप्त किया। मेजबान राजस्थान की टीम उपविजेता रही, जबकि तेलंगाना ने तीसरा स्थान हासिल किया। झारखंड की महिमा कुमारी को महिला वर्ग की 'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' के खिताब से नवाजा गया।

मलेशिया एशियाई चैंपियनशिप के लिए हुआ चयन

फेडरेशन की अध्यक्ष निर्मला रावत ने एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए बताया कि इस प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर भारतीय टीमों का चयन किया गया है। ये टीमें आगामी अप्रैल माह में मलेशिया में आयोजित होने वाली 'द्वितीय एशियाई चैंपियनशिप' में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी।

नारी शक्ति का सम्मान और पर्यावरण संदेश

प्रतियोगिता का शुभारंभ अध्यक्ष निर्मला रावत ने सरस्वती पूजन एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पाँच पौधे लगाकर किया। कार्यक्रम के दौरान सिंघानिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त आईएएस डॉ. मनोज कुमार तथा रजिस्ट्रार डॉ. मोनिका ने निर्मला रावत को 'नारी शक्ति अवार्ड' से सम्मानित किया। इस अवसर पर हॉकी खिलाड़ी शेर खान, अनिल तिवाड़ी सहित खेल जगत की कई विभूतियाँ उपस्थित रहीं।

आभार और भविष्य का संकल्प

विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार ने समापन समारोह में सभी कोचों और टीम प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों से पैरा-खिलाड़ियों को न केवल अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच मिलता है, बल्कि समाज में उनके प्रति सम्मान और संवेदनशीलता भी बढ़ती है। उन्होंने खिलाड़ियों के समर्पण और खेल भावना की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

जयपुर में अनूठी पहल: लकड़ी के बजाय 'गौ-संविदा' की अग्नि के बीच संपन्न हुए विवाह के फेरे

यथार्थ और निशा के विवाह में रची गई नई परंपरा; प्रकृति संरक्षण और गौ-सेवा का दिया सशक्त संदेश

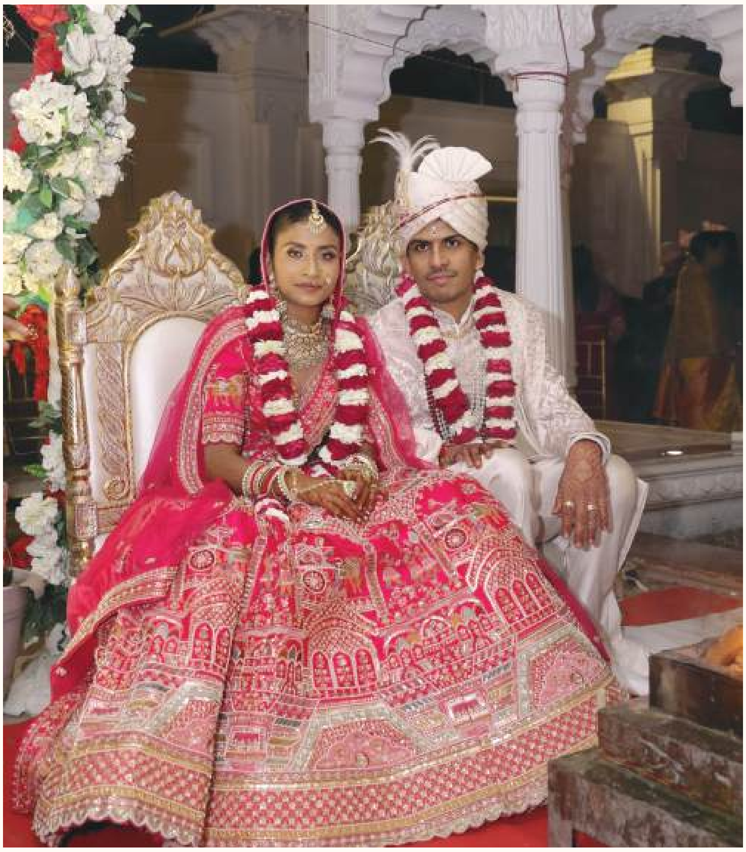

जयपुर. शाबाश इंडिया। पिंक सिटी के सामाजिक परिवेश में 5 फरवरी को एक ऐसी ऐतिहासिक घटना देखने को मिली, जिसने परंपरा को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ दिया। यथार्थ और निशा खंडेलवाल के विवाह के पाणिग्रहण संस्कार में पावन फेरे पारंपरिक लकड़ी के स्थान पर ''गौ संविदा'' (गौकाष्ठ) से संपन्न हुए। यह अभिनव प्रयोग न केवल पेड़ों को बचाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, बल्कि गौ माता को स्वावलंबी बनाने का भी एक अनूठा प्रयास है।

गौ-भक्त नवीन कुमार भंडारी की प्रेरणा का प्रभाव

इस ऐतिहासिक पहल के पीछे समाजसेवी एवं गौ-भक्त नवीन कुमार भंडारी के निरंतर जागरूकता अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके प्रयासों से समाज में प्रकृति के प्रति ऐसी चेतना जागी है कि अब शुभ कार्यों में भी लोग लकड़ी के स्थान पर गौ-संविदा के प्रयोग को प्राथमिकता देने लगे हैं।

समाज को नई दिशा देने का प्रयास

वर-वधू के परिजनों—राजेश व रंजना खंडेलवाल तथा राजीव व अनीता खंडेलवाल ने बताया कि यह प्रयास केवल एक विवाह संस्कार तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज को यह संदेश देने का माध्यम है कि हम अपनी परंपराओं का निर्वहन प्रकृति को क्षति पहुँचाए बिना भी कर सकते हैं। राजीव खंडेलवाल ने कहा कि संपूर्ण समाज गौ-माता की सेवा के लिए प्रतिबद्ध है और नवीन कुमार भंडारी जैसे समर्पित समाजसेवियों के साथ खड़ा है।

गरिमामय उपस्थिति

इस अभिनव संस्कार के साक्षी बनने के लिए कई गणमान्य हस्तियाँ उपस्थित रहीं। जयपुर उपमहापौर पुनीत कर्णावट, समाजसेवी डॉ. सीताराम गुप्ता तथा सर्वधर्म समाज के प्रमुख व्यक्तियों की उपस्थिति ने इस अवसर को और भी गरिमामय बना दिया। सभी अतिथियों ने इस कीर्तिमान की सराहना करते हुए इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बताया।